!! श्री हनुमान जी की आरती !!

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।

जाके बल से गिरिवर कांपै। रोग दोष जाके निकट न झांके।।

अंजनि पुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।।

लंका सो कोटि समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।

लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय सजीवन प्राण उबारे

पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावन की भुजा उखारे

बायै भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संत जन तारे

सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।

कंचन थाल कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई

जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै।।

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

https://bhaktimargdarshan.com/

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी।

अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें।

Bhakti Margdarshan